जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. बी.एस. द्विवेदी
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक–64
दिनांक–31.07.2025

गोस्वामी तुलसीदास का कृषि वैज्ञानिक चिंतन अद्भुत है– डॉ. ब्रजेश दीक्षित

जनेकृविवि में गोस्वामी श्री तुलसीदास जी की जयंती मनाई गई

जबलपुर 31 जुलाई, 2025। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की प्रेरणा से भारतीय मृदा विज्ञान सोसाइटी, जबलपुर चेप्टर के तत्वाधान में आज गोस्वामी श्री तुलसीदास जी की जयंती के मृदा विज्ञान विभाग में आयोजित की गई। इस मौके पर विभागाध्यक्ष, आचार्य डॉ. ब्रजेश दीक्षित ने विविध दृष्टांतों से सिद्ध किया है कि श्री गोस्वामी तुलसीदास के काव्यों में कृषि उद्यानिकी, वानिकी, पर्यावरण तथा जल संचयन के बहुत सुंदर सूत्र संकेत रूप में प्राप्त होते हैं। समस्याग्रस्त मृदाओं में फसलोत्पादन अत्यंत कठिन है। ऊसर भूमि में तृण तथा बीजांकुरण भी संभव नहीं हो पाता। यथा– ऊसर बरषई तृन नहीं जामा। ऊसर बीज बाए फल जथा।। वहीं उर्वर भूमि तृन संकुलित होती है– ''हरित भूमि तृन संकुलित, समुझ परई न पंथ।।'' इसी कारण '' कृषि निरावहीं चतुर किसाना''। धान पकने की स्थिति में शारदीय वृष्टि का महत्व बताते हुए श्री तुलसीदास जी ने लिखा ''कहुँ कहुँ दृष्टि शारदी थोरी'' ''सूखत धान परा जनु पानी।।'' ऐसे अनेक उद्धरणों से डॉ. दीक्षित ने गोस्वामीजी भूमि एवं जल विज्ञान संबंधी तथ्यों को प्रकट किया।

वहीं प्रो. डॉ. एच.के. राय ने गोस्वामी जी के अवतरण एवं उनके काव्यों की सामाजिक उपादेयता पर प्रकाश डाला। डॉ. शैलू यादव ने उनके जीवनवृत्त का वर्णन किया। संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन चेप्टर के सचिव डॉ. बी.एस. द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर विभाग के वैज्ञानिक डॉ. अमित उपाध्याय, डॉ. जी.एस. टैगोर, डॉ. आर.के. साहू कर्मचारी तथा छात्रगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।